Jai Maa Saraswati Gyandayini ISSN: 2454-8367
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer - reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in; Email: jmsjournals.in@gmail.com
Vol.5, Issue-IV, April 2020
Impact Factor: 4.032 (IIJIF)
e-ISJN: A4372-3118

कोविड–19 का भारतीय समाज पर प्रभाव एवं उच्च शिक्षा में भविष्य की संभावनाएं: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

*डॉ0 मनोज गुप्ता
**डॉ0 नन्दन सिंह

संक्षिप्त रूपः

रोजाना हजारो लाखों लोगों को अपने संक्रमण से प्रभावित करने वाले कोरोना वायरस संकट ने आज भारत सहित दुनिया के तमाम देशों के समाजिक जीवन, राजनीति, अर्थव्यवस्था, धर्म, सांस्कृतिक जीवन एवं शिक्षा को किसी न किसी रूप में प्रभावित किया है, लोगों के काम करने के तरीके बदल रहे हैं और नयी आदतें जन्म ले रही हैं। इस प्रकार हमारा जीवन एवं समाज एक बड़े रूपांतरण के दौर से गुजर रहा है और हर जगह अनिश्चितता है, ठहराव है। वर्तमान अध्ययन देश में वैश्विक महामारी कोरोना (कोविड–19) संकट के कारण भारतीय समाज एवं उच्च शिक्षा प्रणाली पर इसके प्रभावों का एक सूक्ष्म स्तरीय वर्णनात्मक अध्ययन है। अध्ययन से भारतीय समाज एवं उच्च शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य का पता चला है साथ ही कोरोना (कोविड–19) संकट के कारण भारतीय समाज एवं उच्च शिक्षा में भविष्य की संभवनाओं को भी यह अध्ययन दृष्टिगत रखता है।

शब्दकुंजीः रूपांतरण, वर्णनात्मक अध्ययन, सामाजिक परिवर्तन, नातेदारी व्यवस्था, सामाजिक सम्बन्ध, आधुनिकता, उच्च शिक्षा प्रणाली, अर्थव्यवस्था, वैज्ञानिक चिंतन, डिजिटल रूपांतरण, वैश्वीकरण।

———————————————————

दिसम्बर, 2019 में चाइना के वुहान शहर से फैला वैश्विक महामारी कोरोना (कोविड–19) आज भारत सहित दुनिया के तमाम देशों के लिए संकट बना हुआ है। सरकार ने इसके फैलाव को रोकने के लिए लाकडाउन की घोषणा की है, लाकडाउन और कोरोना के बाद हमारा जीवन व समाज जैसे ठहर सा गया है। इस प्रकार हमारा जीवन एवं समाज एक बड़े रूपांतरण के दौर से गुजर रहा है, हर जगह अनिश्चितता है, ठहराव है। वर्तमान में यह किसी को पता नही है कि आने वाले समय में यह संकट कौन सा रूप दिखाएगा, और किस नये रूप में हमारे सामने आयेगा। इसकी वर्तमान स्थिति को देखकर, अब यह धारणा तेजी से बन रही है कि आने वाले समय में जब तक कोरोना वायरस खत्म होगा तब तक हमारे जीवन और समाज की तस्वीर या दुनिया की सूरत हमेशा के लिए बदल जाएगी।

वर्तमान अध्ययन देश में वैश्विक महामारी कोरोना (कोविड–19) संकट के कारण भारतीय समाज एवं उच्च शिक्षा प्रणाली पर इसके प्रभावों का एक सूक्ष्म स्तरीय वर्णनात्मक विश्लेषण है। शिक्षा एक विशेषीकृत सामाजिक गतिविधि है, सरलतम समाजों में रोजमर्रा की जिन्दगी में भागीदारी के जरिए परिवार, नातेदार समूह और संपूर्ण समाज द्वारा यह प्रदान की जाती है लेकिन अधिक विकसित समाजों में औपचारिक शिक्षा का महत्व अधिक होता

* **डॉ0 मनोज गुप्ता,** अस्सिटेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, रमाबाई राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अकबरपुर, अम्बेडकरनगर (उ0प्र0)।
** **डॉ0 नन्दन सिंह,** अस्सिटेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, रमाबाई राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अकबरपुर, अम्बेडकरनगर (उ0प्र0)।

है।[1] प्रस्तुत शोध अध्ययन भारतीय समाज एवं उच्च शिक्षा से सम्बन्धित ऐसे ही मुद्दों के बारे में राष्ट्रीय स्तर के साथ–साथ वैश्विक स्तर पर जागरूकता एवं जानकारी प्रदान करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

अध्ययन से भारतीय समाज एवं उच्च शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य का पता चला है साथ ही कोरोना (कोविड–19) संकट के कारण भारतीय समाज एवं उच्च शिक्षा में भविष्य की संभावनाओं को भी यह अध्ययन दृष्टिगत रखता है, जो कि भारत में समाज एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नीति निर्माताओं और संरचनागत विस्तार हेतु वित्तपोषण योजनाओं के लिए, आधारभूत एवं लाभप्रद तथ्य प्रस्तुत करता है।

रोजाना हजारो लाखों लोगों को अपने संक्रमण से प्रभावित करने वाला कोरोना वायरस संकट ने आज भारत सहित दुनिया के तमाम देशों के समाजिक जीवन, राजनीति, अर्थव्यवस्था, धर्म, सांस्कृतिक जीवन एवं शिक्षा को किसी न किसी रूप में प्रभावित किया है, लोगों की आदते बदल रही हैं, काम करने के तरीके बदल रहे हैं और नयी आदतें जन्म ले रही हैं। मनुष्य चूँकि आदतों को दास होता है, जैसे–जैसे आदतें बदलती है वैसे–वैसे हमारे दिन–प्रतिदिन के रहन–सहन के तौर–तरीके बदलते है, जब लोग दिन–प्रतिदिन के जीवन में कार्यों को अलग तरीके से करने पर मजबूर होते हैं तो नयी आदतें जन्म लेती हैं और यही आदतें कहीं न कहीं आगे चलकर समाज में परिवर्तन का कारण बनता है। इनका असर कही न कही सामाजिक संबंधों पर भी पड़ रहा है।[2]

कोरोना ने मानव और मानव के बीच या यह कह सकते है कि मनुष्य के सामाजिक सम्बन्धों के मध्य संदेह और अविश्वास की दीवार खड़ी की है, किस मित्र, किस रिश्तेदार, किस नातेदार, किस परिजन और किस रक्त संबंधी के साथ में कोरोना का संक्रमण या ये कहे की आक्रमण होगा यह डर बना हुआ है। इस प्रकार का डर पहले से ही कमजोर पड़ चुकी नातेदारी व्यवस्था, पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवस्था पर कही न कही एक प्रकार का आघात है। लाकडाउन के समय में लोग अपनो के साथ जो समय भी बिता रहे है साथ ही नौकरी छूटने के कारण लोग एक स्थान से दूसरे स्थान को पलायन करने को बाध्य हैं, इसने पारिवारिक एवं नातेदारी सम्बन्धों में भी कही न कही परिवर्तन किया है लेकिन लोगों के मन में समाज के भविष्य को लेकर अनेकों प्रश्न या यह कहें की आशंकाएं भी है कि आगे भविष्य का क्या होगा क्या यह कोरोना संक्रमण हमें कितना प्रभावित करेगा ? हमारे अपनों का भविष्य क्या होगा, हमारे दोस्तों और रिश्तेदारों का क्या होगा ? क्या हमारी सामाजिकता और संबंध भी काफी कुछ स्क्रीन तक ही सीमित रह जाएगी इत्यादि। अक्सर लोग कहते है कि जमाना बदल गया है, रिश्ते–नाते अब रहे ही नही। इसका अर्थ है कि रिश्ते नातों का स्वरूप बदल रहा है और कही न कही कोरोना (कोविड–19) संकट का प्रभाव रिश्तो–नातों पर भी अवश्य पड़ा है।[3]

अगर सम्पूर्ण समाज के स्तर पर देखा जाए तो चाहे सामाजिक जीवन हो, राजनैतिक जीवन, धार्मिक जीवन या आर्थिक जीवन सभी स्तरों पर इस महामारी ने लागों की सोच और चेतना को भी प्रभावित किया है, एक नये प्रकार का बौद्धिक चिंतन विकसित हुआ है। लोग अन्धविश्वास एवं धार्मिक आस्था के स्थान पर इससे बचाव के वैज्ञानिक तरीकों चिंतन और शोध को अधिक महत्व प्रदान कर रहे है, राजनैतिक मुद्दे भी इसी परिस्थिति के

[1] बाटोमोर, टी0बी0. 2010:*सोशियोलजीः ए गाइड टू प्राब्लम एण्ड लिट्रेचर,* न्यूयार्कः रूटलेज।
[2] डेन्टे, लियोनार्ड ए. 1977:*वेब्लेन थियोरी आफ सोशल चेंज,* न्यूयार्कः एर्नो पब्लिकेशन।
[3] जैन, शोभिता. 1996. *भारत में परिवार, विवाह और नातेदारी,* न्यू दिल्लीः रावत पब्लिकेशन।

इर्द–गिर्द केन्द्रित है, अर्थव्यवस्था को कही न कही गहरा झटका लगा है। धार्मिक स्थलों के बन्द होने से कहीं न कहीं आस्था का स्थान वैज्ञानिक चिंतन ने ले लिया है परन्तु यह चिंतन कितने दिनों तक स्थायी रहेगा यह प्रश्न विचारणीय है।

क्या सदियों से चली आ रही अन्धविश्वास और आस्था के स्थान पर आधुनिक वैज्ञानिक चिंतन प्रभावी होगा, ऐसा मुश्किल जान पड़ता है क्योंकि अब तक के इतिहास को देखा जाए तो भारतीय परम्परा सदियों से अच्छुण रही है, और भारतीय परम्परा ने सामाजिक परिवर्तन को भारतीय समाज के संदर्भ में अपने रूप में या ये कहे अपने अनुसार ही ग्रहण किया है अर्थात आधुनिकता भारतीय परम्परा के हिसाब से परिवर्तित हो जाती है।[4]

लाकडाउन और कोरोना के बाद हमारा जीवन व समाज जैसे रूक सा गया है, पर क्या वास्तव में यह ठहराव है या एक परिवर्तन का दौर है, क्या जीवन वास्तव में रूक ही गया है? शायद नही न जीवन ठहरा है, न ही समाज ठहरा है बल्कि जीवन एक नये रूप में नयी अपेक्षाओं के साथ गतिमान हो रहा है, यह जरूर हो सकता है कि जीवन की गति कुछ कम अवश्य हुयी हो, फिर भी अपेक्षाएं अपना रूप बदल कर नए रूप में हमारे सामने आ रही हैं और हमें इस कोरोना जनित संकट के साथ जीने को मजबूर कर रहा है।

कोरोनावायरस के कारण फिलहाल सभी स्कूल, कॉलेज एवं अन्य शिक्षण संस्थान पूरी तरह से बंद है और समाज खुद भी आनलाइल माध्यमों एवं वर्चुअल सोशल स्पेस में बदलने को बाध्य है, ऐसे में शिक्षा में भी क्लासरूम की अवधारणा वर्चुअल होती जाएगी। एक देश के विकास के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण कारकों में से एक है, इसे समय की जरूरतों और दुनिया के परिदृश्य में बदलना चाहिए, विशेष रूप से, उच्च शिक्षा और उसके हस्तान्तरण के तरीके को नयी चुनौतियों से निपटने के लिए तथा अधिक से अधिक विकास और परिवर्तन के लिए बार–बार पुनरूत्पादित किया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय पुनरुत्थान के लिए मानव संसाधन को सही दिशा देने की खातिर शिक्षा और कौशल स्वाभाविक उपकरण हैं। भारत में उच्च शिक्षा का दृष्टिकोण, देश के मानवीय संसाधनों को समानता एवं समावेशन के साथ उसकी क्षमता का पूर्णतया एहसास कराना है। ज्ञान अर्थव्यवस्था के उभरते हुए परिदृश्य में उच्च शिक्षा की भूमिका किसी भी देश के लिए सामान्य रूप से अत्यन्त महत्वपूर्ण और बहुआयामी है, विशेषकर भारत के संन्दर्भ में यह और भी प्रामाणिक है।[5] इस पृष्ठभूमि में, भारतीय उच्च शिक्षा में कोरोना संकट के कारण वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए प्रणाली में एक आदर्श बदलाव की आवश्यकता है लेकिन इस बदलाव के कारण क्या हम धीरे–धीरे एक ऐसे समाज में बदलते जा रहे हैं जहां सीधा संवाद का अवसर लगभग खत्म हो जाएगा, सब कुछ वर्चुअल, ऑनलाइन एवं डिजिटल टेक्नो संवादों के रूप में ही रह जाएगा ? संभव है कि उच्च शिक्षा का यह नया आनलाइन एवं वर्चुअल रूपांतरण हमें बेहतरी की ओर ले जाए और उच्य शिक्षा प्राप्त करने के तमाम नये अवसर प्रदान करे किंतु भारत जैसे समाज में जहां गरीब, उपेक्षित और दूरस्थ क्षेत्रों में बसे समाजिक समूहों है उच्च शिक्षा को सभी के लिए बनाए

[4] सिंह, योगेन्द्र. 1996: *मार्डनाइजेशन आफ इण्डियन ट्रेडिसन*, न्यू दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।

[5] श्रवणकुमार, ए0आर0. 2014: प्रजेन्ट सिनेरियो एण्ड फयूचर प्रोसपेक्ट्स आफ हायर एडुकेशन इन इण्डिया, मलेशिया: प्रोसीडिंग्स आफ सोशल रिसर्च जर्नल।

रखने के लिए भारतीय समाज के उपेक्षित एवं अति उपेक्षित समूहों को भी इस डिजिटल रूपांतरण से जोड़ना भी क्या एक चुनौती नही है ?

भारत में उच्च शिक्षा के वर्तमान स्वरूप के सम्बन्ध में सामान्य रूप से, ऐसे कई प्रश्न हैं, जो अभी भी अनुत्तरित हैं।

उच्च शिक्षा के अवसरों के अनियोजित विस्तार, शिक्षित बेरोजगारों की बढ़ती प्रवृत्ति, शिक्षा का व्यवसायीकरण, गुणवत्ता, समानता और उत्कृष्टता के साथ मात्रा का असंतुलन, कुछ ऐसे विशिष्ट मामले हैं, जो भारत के उच्च शिक्षा के लिए निरंतर खतरे पैदा करते रहे हैं और अब कारोना संकट के कारण उच्च शिक्षा के स्वरूप में बदलाव करना नीति निर्माताओं के लिए और भी चुनौती पूर्ण हो गया है। इस प्रकाश में, शिक्षा में आने वाले नए सुधारों को उच्च शिक्षा में सभी उपरोक्त चिंताओं का समाधान करना चाहिए और जानकारी को वर्गीकृत करने और पुनः वर्गीकृत करने की नई पद्धतियां शामिल करना चाहिए।[6] समस्याओं को नए और अलग–अलग दृष्टिकोण से कैसे देखें और आखिरकार कैसे आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए भारतीय उच्च शिक्षा को विकसित किया जाना चाहिए।

भविष्य की संभावनाओं को पूरा करने के लिए शिक्षकों को ऐसे सार्थक सुधारों में नहीं छोड़ा जाना चाहिए क्योंकि शिक्षकों ने ही राष्ट्रों के लिए तकनीकी विशेषज्ञ, वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर, नीति निर्माता, व्यवसायी आदि जैसे सर्वोत्तम प्रशिक्षित मानव शक्ति प्रदान की है।[7] प्रोफेसर अभी भी बोर्ड एवं मार्कर, या साधारण व्याख्यान जैसे पुराने शिक्षण के तरीकों को अपनाते हैं, वे शिक्षण में ऑडियो विजुअल पद्धति का उपयोग करना पसंद नहीं करते, वे उपलब्ध जानकारी और वैश्विक मांगों के साथ अद्यतित नहीं हैं। अभी भी बहुत से शिक्षक आनलाइन माध्यमों से शिक्षण कार्य करने की पद्धतियों से अनभिज्ञ हैं इसलिए, शिक्षकों को भी भारतीय उच्च शिक्षा के लिए सुधारों के एक हिस्से के रूप में सशक्त होना चाहिए ताकि उच्च शिक्षा को कोरोना जनित संकट, उदारीकरण और वैश्वीकरण की बढ़ती मांगों के अनुकूल बनाया जा सके। उभरते हुए भारतीय समाज की बदलती मांगों का सामना करने के लिए उनके उच्च शिक्षा की व्यवस्था में नवोन्मेष भविष्य की आवश्यकता है।

हमारी सरकार एवं शिक्षण संस्थाओं को इस प्रकार उच्च शिक्षा और शोध के लिए नये तरीके से विकसित करना होगा, एक नये प्रकार के इन्फ्रास्ट्रक्चर की आवश्यकता होगी, ई–लर्निंग के लिए नये प्रकार के संसाधनों की आवश्यकता होगी और इन सब कार्यों के इसके लिए धन की बड़ी आवश्यकता होगी जबकी हमारी शिक्षा व्यवस्था की वर्तमान स्थिति इसके अनुकूल नही है।[7] कोरोना हमारी अर्थव्यवस्था में पहले से ही संकट पैदा कर रहा है जो कि हमारी उच्च शिक्षा और इसकी गुणवत्ता को प्रभावित करेगा। इस प्रकार हमें कोरोना जनित संकट को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षा प्रणाली में बदलाव की आवश्यकता होगी जो कि हमारी वर्तमान आर्थिक स्थिति के अनुकूल हो।

एक बड़ी चुनौती उच्च शिक्षा के पारम्परिक मॉडल में बदलाव को लेकर यह होगी कि ऐसे वक्त में जब आनलाइन कोर्सेज को पारम्परिक मॉडल के स्थान पर प्रासंगिक करना होगा तब क्या कटेंट की गुणवत्ता एवं उच्च

[6] रिपोट,यू0जी0सी0. 2011: इन्क्लयूसिव एण्ड क्वालिटेटिव एक्सपेन्सन आफ हायर एडुकेशन, फाइव ईयर प्लान, 2012–17।

[7] अग्रवाल, पी0. 2006. *हायर एजुकेशन इन इण्डियाः द नीड फार चेन्ज*, वर्किंग पेपरः इण्डियन काउन्सिल फार रिसर्च आन इण्टरनेशनल इकनामिक रिलेसन।

शिक्षा की स्वायत्तता की चुनौति उच्च शिक्षा में व्यवहारिक रूप से जान नही पड़ती है ? ई.मेटीरियल, ऑनलाइन कोर्स कंटेंट, विडियो और ऑडियो लेक्चर, कंटेंट डिलीवरी या नोट्स का प्रेषण क्या मात्र को अध्यापन समझ लेना पर्याप्त होगा। क्या छात्रों के अनुरूप प्रणाली को अपनाकर परस्पर संप्रेषण का अवसर प्रदान करना भी इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली में एक प्रकार की चुनौती न होगा ?

इण्टरनेट कनेक्टीविटी, पावर सप्लाई, शैक्षणिक सामग्री का मूल भाषा में अभाव, प्रवीण प्रशिक्षकों की अनुपलब्धता, कन्टेन्ट क्रीएशन के लिए टेक्निकल एसोसिएट्स की आवश्यकता, अज्ञानता, आर्थिक संसाधनों की कमी, शहरी और ग्रामीण भारत का द्वन्द्व, रख–रखाव और इन्स्टालेशन सम्बन्धी समस्या साथ ही डाटा और इण्टरनेट सम्बन्धी एक राष्ट्रीय नीति का अभाव, अध्यापन का लैग्वेज, मूल्यांकन आदि की समस्या भी इस प्रकार की उच्च शिक्षा के लिए एक चुनौती है। प्रयोग कैसे किये जाएं, क्या वर्चुवल लैब पर्याप्त होगी? अगर नेट कनेक्टीविटी की बात की जाय तो दुनिया में जहाँ 7जी, 8जी का दौर चल रहा है वहां हम अभी भारत 4जी पर ही कार्य कर रहा हैं जिससे आडियो और वीडियो सूचना सम्प्रेषण में दिक्क्तें आ रही हैं। काल ड्राप, अस्पष्ट आडियो, वीडियो और डिस्कनेक्ट जैसी समस्या शिक्षण को बीच में ही बाधित करता है, जो कि उच्च शिक्षा के लिए एक व्यवहारिक चुनौती है।

किसी भी शैक्षिक व्यवस्था के लिए तीन घटक छात्र–छात्राएं, अध्यापक और अभिभावक विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। आनलाइन मोड में छात्र–छात्राओं, शिक्षकों एवं अभिभावकों का यह रिश्ता कैसे बना रहे साथ ही छात्र–छात्राओं की रूचि किस प्रकार ज्ञानार्जन में बनी रहे यह भी महत्वपूर्ण है। अक्सर ऐसा देखा जाता है कि शुरूवात में तो छात्र–छात्रायें इस ई–लर्निंग व्यवस्था में रूचि लेते है और सहयोग करते है परन्तु बाद में छात्र–छात्राओं और शिक्षकों का इस प्रकार ई–सम्बन्ध नीरस हो जाता है, जिसके कारण पूरी शिक्षण की प्रक्रिया बाधित होने लगती है। उच्च शिक्षा का व्यक्ति और समाज से गहरा रिश्ता होता है, गुणवत्ता पूर्ण उच्च शिक्षा ही देश एक अच्छे व्यक्तित्व और अन्ततः एक विकसित समाज का निर्माण करती है, बदलती ई– लर्निंग व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में हमारी नैतिकता पूर्ण, गुणवत्तापूर्ण व व्यक्ति एवं समाज निर्माण केन्द्रित शिक्षा पद्धति कहाँ तक अपनी अस्मिता को अच्छुण बनाये रखने में समर्थ है, यह प्रश्न भी विचारणीय है।[8]

हमें इस कोरोना जनित समय के साथ खुद को समायोजित करना है, समाज की बदलती मांगों के अनुरूप भारतीय उच्च शिक्षा को नवीनता और भविष्य की योजनाओं के अनुरूप बनाने की आवश्यकता है, इस लड़ाई में हमें अपने 'ज्ञान एवं नवाचार' को एक हथियार के रूप में विकसित करना होगा। शिक्षा की लगातार गिरती जा रही गुणवत्ता को उठाने के लिए तथा कोरोना जनित समय के साथ 21वीं सदी में उच्च शिक्षा को विकासशील अर्थव्यवस्था एवं इन चुनौतियों के अनुरूप खुद को समायोजित करने के लिए एक नई सोच चाहिए, नई नीति चाहिए। भारत के उच्च शिक्षा के लिए विश्वविद्यालयों और अन्य डिग्री प्रदान करने वाले संस्थानों द्वारा प्रदान की गई शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए सुधार–तंत्र की आवश्यकता है, इस सुधार–तंत्र को उच्च शिक्षा और शोध कार्यक्रमों के शोधन, विविधता लाने और उन्नयन पर ध्यान देना चाहिए, यद्यपि इसमें बहुत सी चुनौतियां है लेकिन

[8] अग्रवाल, एम0. 2008. *एडूकेशन इन थर्ड वर्ल्ड एण्ड इण्डियाः ए डेवलेपमेन्टल पर्सपेक्टिव,* डेल्हीः कन्किा पब्लि.।

चुनौतियों को अवसर में बदलने की योग्यता भी विद्वानों में ही है। यह विश्लेषण तो मात्र कोविड–19 का भारतीय समाज पर प्रभाव एवं उच्च शिक्षा में भविष्य की संभावनाओं पर मिलकर विचार करने, चिंतन करने और इन चुनौतियों को अवसर में कैसे बदला जाय इसके लिए एक नयी सोच नया आयाम देने का एक प्रयास है लेकिन इस चितंन एवं प्रयास को सफल बनाने हेतु एक ठोस एवं सकारात्मक कदम उठाए जाने की आवश्यकता अवश्य प्रतीत होती है।

****